Date - 27 - 04 - 2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. Sachababli 1987@gmail.com
Cont. no. - 8409587640
Class. B.A. - Part (I) Hons.

Topic - Buddhism - (No-Soul theory)

Scanned with CamScanner

अनात्मवाद (नैरात्मवाद) (No-Soul theory)

चार्वाक को छोड़कर अन्य भारतीय दर्शनों ने आत्मा को नित्य, शाश्वत, अमर तत्व के रूप में स्वीकार किया गया है। बौद्ध दर्शन का अनात्मवाद का सिद्धान्त आत्मा सम्बन्धी परम्परागत मतों से भिन्नता एवं विपरीतता को दर्शाता है। अनात्मवाद का सिद्धान्त बौद्ध दर्शन के कारणता - सिद्धान्त प्रतीत्यसमुत्पाद की तार्किक परिणति है।

अनात्मवाद के अनुसार आत्मा नित्य, शाश्वत, अमर नहीं है अपितु वह भी सांसारिक वस्तुओं की भांति परिवर्तनशील है। यदि अनात्मवाद के शाब्दिक एवं संकीर्ण अर्थ को लिया जाए तो अनात्मवाद का आशय आत्मा के अस्तित्व के खंडन या उसकी अस्तित्वविहीनता होगा।

Scanned with CamScanner

ऐसी स्थिति में यह सिद्धान्त उच्छेदवाद का यह अर्थ अस्वीकार्य है।

बुद्ध के अनुसार शाश्वत आत्मा मन और शरीर का संकलन या समुच्चयमात्र है। इस संकलन में भी प्रतिक्षण परिवर्तन होते रहता है।

बौद्ध धर्म उपदेशक नागसेन 'मिलिन्द प्रश्न' में आत्मा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार धुरी, चक्के, रस्सियाँ घोड़े आदि के संघात-विशेष को 'रथ' कहा जाता है, उसी तरह से पंचस्कन्धों की समष्टि का नाम आत्मा है। आत्मा पंचस्कन्धों का संघात है। ये पांच स्कन्ध हैं - रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान। ये स्कन्ध आत्मा के घटक हैं।

इनमें रूपस्कन्ध आत्मा का भौतिक घटक है और वेदना स्कन्ध, संज्ञा स्कन्ध, संस्कार स्कन्ध और विज्ञान स्कन्ध उसके मानसिक घटक हैं। इस प्रकार आत्मा भौतिक एवं मानसिक तत्वों की समष्टि का नाम है। रूप स्कन्ध में मनुष्य के शरीर के जो आकार, इन्द्रियाँ, रंग आदि हैं वे सब रूप के अंदर आते हैं।

Scanned with CamScanner

वेदना स्कन्ध के अन्तर्गत सुखात्मक, दुःखात्मक एवं उदासीन, इन तीनों प्रकार की भावनाओं का समावेश किया जाता है। संज्ञा स्कन्ध में अनेक प्रकार के ज्ञान आते हैं। रूप, वेदना, और संज्ञा के बीच समन्वय करने वाली मानसिक शक्ति को संस्कार कहते हैं। विज्ञान स्कन्ध में चेतना की गणना की जाती है, ये पंचस्कन्ध ही आत्मा के अवयव हैं। इन स्कन्धों के परिवर्तनशील होने के कारण आत्मा भी सदैव परिवर्तनशील है। पाश्चात्य विचारक विलियम जेम्स ने भी आत्मा को विज्ञान का प्रवाह (Stream of consciousness) कहा है।

नैरात्मयवाद दो प्रकार का है- (1) पुद्गलनैरात्मय (2) धर्मनैरात्मय

(1) पुद्गल या जीवात्मा की केवल व्यवहारिक सत्ता है। वस्तुतः वह अनात्म अवीत् सापेक्ष है। इस ज्ञान से क्लेशावरण का क्षय होता है। हीनयान केवल पुद्गल नैरात्म्य में विश्वास करता है।

(2) धर्मनैरात्म्य के अनुसार धर्म या पदार्थ भी व्यवहारिक है। वे भी अनात्म या सापेक्ष है। इस ज्ञान से क्लेशावरण दूर होता है।

क्लेशावरण और ज्ञेयावरण के नाश से निर्मित निर्वाण प्राप्त होता है।

बौद्ध दर्शन का अनात्मवाद उनके मध्यम मार्ग के अनुरूप है। अनात्मवाद न तो चार्वाक की तरह आत्मा का पूर्णतया खण्डन करता है। (उच्छेदवाद) और न ही वेद और उपनिषद के आत्म तत्व की तरह नित्य आत्मा का समर्थन करता है। (शाश्वतवाद)। आत्मा वस्तुतः पंचस्कन्धों का संघात है जिसमें सदैव परिवर्तन होता रहता है। इस प्रकार अनात्मवाद उच्छेदवाद और शाश्वतवाद के मध्य की स्थिति को इंगित करता है।

आलोचना —

(i) कर्म-नियम की सम्यक व्याख्या नहीं हो पाती है।

(ii) स्मृति एवं ज्ञान की व्याख्या तर्कतः नहीं हो पाती है।

Scanned with CamScanner